भट्टारक भुवनकीर्ति

जीवन-परिचय : भट्टारक भुवनकीर्ति की गणना भट्टारक सकलकीर्ति के प्रधान शिष्यों में की जाती है।

आचार्य भुवनकीर्ति विविध भाषाओं और शास्त्रों के ज्ञाता थे। इन्हें विभिन्न कलाओं का भी ज्ञान था। इनके उपदेश से कई मन्दिरों और मूर्तियों की स्थापना की गयी।

भट्टारक भुवनकीर्ति का समय विक्रम संवत् 1508-1527 माना है।

रचना-परिचय : आचार्य भुवनकीर्ति द्वारा रचित तीन ग्रन्थ उपलब्ध हैं—

1. जीवन्धर रास : इसमें जीवन्धरस्वामी के चरित का वर्णन है।

2. जम्बूस्वामी रास : इसमें जम्बूस्वामी के चरित का रास-शैली में अंकन है।

3. अञ्जनाचरित : इसमें अञ्जना के आख्यान को निबद्ध किया है।